वाक़ेअ़ए करबला का पस मंज़र

(अह़ादीष की रौशनी में)

मुरत्तिब
खुसरो क़ासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डो. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्डेशन
(अेह्ले सुन्नत)

वाक़ेअ़ए करबला का पस मंज़र

(अह़ादीष की रौशनी में)

मुरत्तिब

खुसरो क़ासिम

रस्मुल ख़त हिन्दी

डो. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी

:: नाशिर ::

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन (अह्ले सुन्नत)

किताब का नाम : **वाक़ेअ़ए करबला का पस मंज़र**
(अहादीष की रौशनी में)

मुरत्तिब : **ख़ुसरो क़ासिम**

रसमुल ख़त हिन्दी : **डॉ. शहेज़ादहुसैन क़ाज़ी**

सफ़हात : **42**

सने इशाअत : **2019**

कम्पोज़िंग : **इमाम जा'फर सादीक फाउन्डेशन** (अहले सुन्नत),
मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्ड़ेशन

(अह्ले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया
+91 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु कि जो बडा महरबान बख़्शनेवाला है, नही है कोई मा'बूद सिवाय अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है । अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से "वाक़ेआए करबला का पस मंज़र (अहादीष की रौशनी में)" किताब का हिन्दी लिपियांतर करने का काम लिया ।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अहले बैते अत्हार, ख़ास कर बनू फातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किया जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किया हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफे दी जाती थी, मिम्बरो पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाए दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफा को इमाम नफस्सुसज़किय्या की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फतवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाकिम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फतवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अह्ले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ाए इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मजाहिर और हुर्र बनकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कही इल्म के मैदान में इमाम नसाई,

इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफा, इमाम शाफीई बनकर आए तो कहीं दीन की तब्लीग में ख़्वाजा गरीब नवाज, निजामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख़्दुम माहिम और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए । वक्तन फ वक्तन हर मैदान में गुलामानें अह्ले बैत नासबिय्यत व ख़ारजिय्यत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देते रहे और अपनी जाने भी कुर्बान करते रहे ।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और ख़ारजिय्यत तमाम फिर्क़ों में अपना सर उठा रही है बल्के मैं कहेना चाहुँगा उरुज पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबियत की डोर कल सल्तनत के बादशाहो ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा व मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रख़कर लोगों से फजाइले अह्ले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अह्ले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्जीमों नें संभाल ली है । कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फजाइले अह्ले बैत छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ुअ़ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस **Democracy** (जम्हूरिय्यत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत भी फज़ाइले अह्ले बैत नहीं बता रही है बल्कि अवाम को कुर्आन व अह्ले बैत से दूर किया जा रहा है । कुर्आन के तर्जुमा व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अह्ले बैत पर शिया राफ़ज़ी के फतवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह ﷺ का कौल साबित है कि नबीए करीम ﷺ ने फरमाया :

"मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उसके मौला है"

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)(रावी सिक्का)

मुख़्तसर हदीस :

“हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीजें छोड कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या’नी मेरे अहले बैत ؓ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नहीं होंगे ता आँ कि हौज पर आकर मुझ से मिले।”

(इमाम नसाई फी ख़साइस अमीरुल मोमिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे कुर्आन और अहले बैत ؓ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रख़ने का काम अन्जाम दे रहे है। आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अहले बैत ؓ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अहले बैत ؓ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबए किराम की ؓ शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है। मैं इस बात पर ज़्यादा लिख़कर अपनी बात को लम्बा नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है। अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि मेरी इस काविश को कुबूल फरमाये और मेरी इस किताब के प्रकाशन का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के मोमिन व मोमिनात की रुहो को और मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण को जिन्हों ने मुझे बचपन से मुहब्बते अहले बैत ؓ शिख़ायी, उनकी रुह को अज्र अता फरमाये और उनकी मग़फिरत फरमाये, सय्यिदा जहराए पाक ؓ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ो में शुमार करें। आमीन....

इस बीच प्रोफेसर खुसरो क़ासिम साहब से मेरी मुलाकात हुई और उनकी किताबो का हिन्दी, गुजराती ज़बान में तर्जुमा के काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले “खतीबे अह्ले बैत ﷺ मुफ्ती शफ़ीक़ हनफी कादरी साहब (मुम्बई)” का तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फाज़ के हिन्दी-गुजराती मा’ना में **Confuse** हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले “दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद, गुजरात)” का भी शुक्रगुजार हूँ ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश को कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए !

डो. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी

1 मुहर्रम, हिजरी **1441**

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

पेश लफ्ज़

वाक़ेअ़ए करबला इस्लामी तारीख़ का एक ऐसा वाक़ेआ है जिस की तमाम जुज़ईय्यात और तफ़सीलात कुतुबे अह़ादीष और कुतुबे सैर व तवारीख़ में मह़फ़ूज़ हैं। उस की म'अनविय्यत को मुताष्षिर करने के लिये कई क़िस्म की झूटी और मौज़ूअ़ रिवायत फैला दी गई हैं जिन की वजह से ख़ासे पढ़े लिखे लोग भी शकूक व शुबहात में गिरफ़्तार हो जाते हैं। ज़रूरत थी के वाक़िआ करबला को स़ह़ीह़ अह़ादीष और मुस्तनद तारीख़ी रिवायात की रौशनी में सामने लाया जाए ताकि ह़क़ीक़त खूल कर सामने आ सके।

इसी मक़स़द को सामने रखते हूए मैंने सिर्फ़ उन अह़ादीष व आषार का इन्तिख़ाब किया है जो दौरे ह़ाज़िर के मुह़द्दिषीन और मुह़क़्क़िक़ीन की नज़र में स़ह़ीह़ और मुस्तनद हैं। इस ज़ैल में मैंने शैख़ नासिरुद्दीन अलबानी, शैख़ शुऐब अरनोवत और शैख़ जुबैर अ़ली ज़ई की तेह़क़ीक़ात से इस्तिफ़ादा किया है और ऐसी कोई रिवायत दर्ज नहीं की है जिस पर ह़दीष व रिजाले ह़दीष के माहिरीन ने कलाम किया है।

अल्लाह ﷻ से दुआ है कि किताब को शर्फ़े क़ुबूलिय्यत अ़त़ा फ़रमाए, हमारे दिलों मे ख़ानवादए रिसालत ﷺ की सच्ची मुह़ब्बत पैदा फ़रमाए। आमीन।

तालिबे दुआए शफ़ाअ़ते रसूल ﷺ

खुसरो क़ासिम

Assistant Professor

Mechanical Engineering Department

A.M.U Aligarh

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

(1)عن ابن عمر قال دخلت على حفصة ونسواتها تنطف قلت قد كان من أمر الناس ما ترين فلم يجعل لى من الأمر شيء فقالت الحق فإنهم ينتظرونک وأخشى أن يكون فى احتباسک عنهم فرقة فلم تدعه حتى ذهب فلما تفرق الناس خطب معاوية قال من كان يريد أن يتكلم فى هذا الأمر فليطلع لنا قرنه فلنحن أحق به منه ومن أبيه قال حبيب بن مسلمة فهلا أجبته قال عبد الله فحللت حبوتى وهممت أن أقول أحق بهذا الأمر منک من قاتلک وأباک على الإسلام فخشيت أن أقول كلمة تفرق بين الجمع وتسفک الدم ويحمل عنى غير ذلک فذكرت ما أعد الله فى الجنان قال حبيب حفظت وعصمت.(صحيح البخارى:4108)

---

(1) इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि मैं ह़फ़सा رضی اللہ عنہا के यहां गया तो उन के सर के बालों से पानी के क़त़रात टपक रहे थे । मैंने उन से कहा कि तुम देखती हो लोगों ने क्या किया और मुझे तो कुछ भी हुकूमत नहीं मिली। ह़फ़सा رضی اللہ عنہا ने कहा के मुसलमानों के मजमाअ़ में जाओ लोग तुम्हारा इन्तिज़र कर रहे हैं। कहीं ऐसा न हो के तुम्हारा मौक़ाअ़ पर न पहोंचना मज़ीद फूट का सबब बन जाए। आख़िर ह़फ़सा رضی اللہ عنہا के इस़रार पर अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ عنہ गए। फिर जब लोग वहां से चले गए तो मुआ़विया رضی اللہ عنہ ने ख़ुत्बा दिया और कहा कि ख़िलाफ़त के मसअले पर जिसे गुफ़्तगू करनी हो वोह ज़रा अपना सर तो उठाए। यक़ीनन हम उस से (इशारा इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہ की त़रफ़ था) **ज़ियादा ख़िलाफ़त के ह़क़दार हैं और उस के बाप से भी ज़ियादा।** ह़बीब बिन मस्लमा رضی اللہ عنہ ने इब्ने उ़मर رضی اللہ عنہ से इस पर कहा के "आप ने वहीं उस का जवाब क्यूं नहीं दिया ?" अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رضی اللہ عنہ ने कहा के **"मैं उसी वक़्त (जवाब देने को तय्यार हुवा) और इरादा कर चुका था कि उन से कहूं कि तुम से ज़ियादा ख़िलाफ़त का ह़क़दार वोह है जिस ने तुम से और तुम्हारे बाप से इस्लाम के लिये जंग की थी।**

लेकिन फिर मैं डरा की कहीं मेरी इस बात से मुसलमानों में इख़्तिलाफ़ बढ़ न जाए और ख़ूनरेज़ी न हो जाए और मेरी बात का मतलब मेरी मन्शा के ख़िलाफ़ न लिया जाने लगे। इस के बजाए मुझे जन्नत की वोह ने'मतें याद आ गईं जो अल्लाह तआला ने (सब्र करनेवालों के लिये) जन्नतों में तैयार कर रखी हैं।" हबीब इब्ने अबी मस्लमा ﷺ ने कहा के "अच्छा हुवा आप महफ़ूज़ रहे और बचा लिए गए आफ़त में नहीं पड़े"।

(सहीह बुख़ारी : 4108)

(2)عن أبي سعيد الخدري يقول: كنا جلوسا ننتظر رسول الله صلى الله عليه وسلم فخرج علينا من بيوت بعض نسائه قال فقمنا معه، فانقطعت نعله فتخلف عليها علي يخصفها فمضى رسول الله صلى الله عليه وسلم ومضينا معه ثم قام ينتظره وقمنا معه، فقال إن منكم من يقاتل على تأويل القرآن كما قاتلت على تنزيله فاستشرف لها وفيهم أبو بكر، وعمر فقال: لا ولكنه خاصف النعل، قال: فجئنا نبشره قال: فكأنه قد سمعه .

(مسند احمد: 11790،قال الشيخ شعيب الأنؤوط: اسناده صحيح)

(2) सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं कि एक दिन हम बैठे रसूलुल्लाह ﷺ की आमद का इन्तिज़ार कर रहे थे। आप ﷺ अपनी बा'ज़ अजवाजे मुतह्हिरात के हुजरे से बाहर तशरीफ़ लाए। हम भी आप के साथ चलने के लिये उठ खड़े हूए। इत्ने में आप के जूते का तस्मा टूट गया। अ़ली ﷺ पीछे रुक कर जूते गांठने लगे और रसूलुल्लाह ﷺ ज़रा दूर निकल गए। हम भी आप के साथ साथ दूर पहोंच गए। एक जगह आप रुक कर अ़ली ﷺ का इन्तिज़ार करने लगे। हम भी आप के साथ खड़े हो गए। इसी दौरान आप ﷺ ने फ़रमाया के **"तुम में से एक शख़्स़ कुरआन की तावील पर इसी तरह जंग करेगा जिस तरह कुरआन के नुजूल पर मैंने जंग की है।"** अपने हक़ में येह बशारत सुनने के लिये हर कोई झांकने लगा। साथ वालों में अबू बकर व उ़मर ﷺ भी थे। आप ﷺ ने वज़ाहत

फ़रमाई के **“नहीं कोई और नहीं, वोह जूते गांठने वाले साहिब हैं।”** हम येह बशारत देने के लिये अली ﷺ के पास पहोंचे लेकिन उन्हों ने येह बात ख़ूद अपने कानों से सुन ली थी।”

(मुस्नद अह़मद : 11790, शैख़ शुऐब अश्नोवत ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(3)عن إبراهيم قال ذهب علقمة إلى الشأم فلما دخل المسجد قال اللهم يسر لى جليسا صالحا فجلس إلى أبى الدرداء فقال أبو الدرداء ممن أنت قال من أهل الكوفة قال أليس فيكم أو منكم صاحب السر الذى لا يعلمه غيره يعنى حذيفة قال قلت بلى قال أليس فيكم أو منكم الذى أجاره الله على لسان نبيه صلى الله عليه وسلم يعنى من الشيطان يعنى عمارا قلت بلى.(صحيح البخارى:3742)

(3) इब्राहीम ने बयान किया कि अ़लक़मा ﷺ शाम में तशरीफ ले गए, और मस्जिद में जा कर येह दुआ की, “अय अल्लाह ﷻ मुझे एक नेक साथी अ़ता फ़रमा,” चुनांचे आप को ह़ज़रत अबू दरदा ﷺ की स़ोह़बत नस़ीब हूई। ह़ज़रत अबू दरदा ﷺ ने दरियाफ़्त किया, “तुम्हारा ता’ल्लुक कहां से है ?” अ़र्ज़ किया के “कूफ़ा से,” इस पर उन्हों ने कहा : “क्या तुम्हारे यहां नबीए करीम ﷺ के राज़दार नहीं हैं के उन राज़दारों के सिवा और कोई नहीं जानता ? (उन की मुराद ह़ज़रत अबू ह़ुज़ैफ़ा ﷺ से थी)” उन्हों ने बयान किया के मैंने अ़र्ज़ किया जी हाँ मौजूद हैं,” फिर उन्हों ने कहा : “क्या तुम में वोह शख़्स़ नहीं हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी ﷺ की ज़बानी शयत़ान से अपनी पनाह दी थी। (उन की मुराद अ़म्मार ﷺ से थी)”, मैंने अ़र्ज़ किया के “जी हां वो भी मौजूद हैं।” (या’नी ह़ज़रत अ़म्मार बिन यासिर ﷺ से बढ़कर कौन स़ालेह़ हमनशीन हो सकता है।)

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 3742)

(4)عن أبى مريم عبد الله بن زياد الأسدى قال لما سار طلحة والزبير وعائشة إلى البصرة بعث على عمار بن ياسر وحسن بن على

فـقـدمـا عـلـينا الكوفة فصعدا المنبر فكان الحسن بن على فوق المنبر فى أعـلاه وقـام عمار أسفل من الحسن فاجتمعنا إليه فسمعت عمارا يقول إن عـائشة قـد سـارت إلـى البـصـرة و والله إنها لزوجة نبيكم صلى الله عليه وسـلـم فـى الـدنيـا والآخـرـة ولكن الله تبارك وتعالى ابتلاكم ليعلم إياه تطيعون أم هى.(صحيح البخارى:7100)

(4) अबू मरियम अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ियादुल असदी ने बयान किया के जब त़ल्हा, जुबैर और आ़इशा ﷺ बस़रा की त़रफ़ रवाना हूए तो अ़ली ﷺ ने अ़म्मार बिन यासिर और ह़सन बिन अ़ली ﷺ को भेजा। येह दोनों बुज़ुर्ग हमारे पास कूफ़ा आए और मिम्बर पर चढ़े। ह़सन बिन अ़ली ﷺ मिम्बर के उपर सब से उंची जगह थे और अ़म्मार बिन यासिर ﷺ उन से नीचे थे। फिर हम उन के पास जमअ़ हो गए और मैंने अ़म्मार ﷺ को येह केहते सुना के आ़इशा ﷺ बस़रा गई हैं और ख़ुदा की क़सम वोह दुनिया व आख़िरत में तुम्हारे नबी ﷺ की पाक बीवी हैं लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला ने तुम्हें आज़माया है ताके जान ले के तुम उस अल्लाह ﷻ की इत़ाअ़त करते हो या आ़इशा ﷺ की”।

(स़हीह़ बुख़ारी : 7100)

(5)عـن أبـى بـكـرة قال لقد نفعنى الله بكلمة سمعتها من رسول الله صـلى الله عليه وسلم أيام الجمل بعد ما كدت أن ألحق بأصحاب الجمل فأقاتل معهم قال لما بلغ رسول الله صلى الله عليه وسلم أن أهل فارس قد مـلـكـوا عـليهم بنت كسرى قال لن يفلح قوم ولوا أمرهم امرأة.(صحيح البخارى:4425)

(5) अबू बक्र ﷺ ने बयान किया के जंगे जमल के मौक़ा’ पर वोह जुम्ला मेरे काम आ गया जो मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना था। मैं इरादा कर चुका था के अस़ह़ाबे जमल ह़ज़रत आ़इशा ﷺ और आप के लश्कर के साथ शरीक हो कर (ह़ज़रत अ़ली ﷺ की) फ़ौज से लड़ूं। उन्होंने बयान किया के जब हुज़ूरे अकरम ﷺ

को मा'लूम हुवा के अहले फ़ारस ने किस्रा की लड़की को वारिषे तख़्त व ताज बनाया है तो आप ﷺ ने फ़रमाया के वोह क़ौम कभी फ़लाह़ नहीं पा सकती जिस ने अपना हुकमरान किसी औ़रत को बनाया हो"।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 4425)

(6)عن قيس قال لما أقبلت عائشة بلغت مياه بني عامر ليلا نبحت الكلاب قالت أى ماء هذا قالوا ماء الحوأب قالت ما أظنني الا اني راجعة فقال بعض من كان معها بل تقدمين فيراک المسلمون فيصلح الله عزوجل ذات بينهم قالت ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال لها ذات يوم كيف باحداكن تنبح عليها كلاب الحوأب.(مسند احمد: 24229،السلسلة الصحيحة:474،قال الشيخ الألباني والشيخ شعيب الارنؤوط:اسناده صحيح)

(6) क़ैस ताबई रहमतुल्लाह अलैह केहते हैं के जब आ़इशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रात के वक़्त बनू आ़मिर के चश्मों के क़रीब पहोंचीं तो वहां कुत्ते भोंकने लगे। सय्यिदा आ़इशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा : "येह कौन सा चश्मा है ?" लोगों ने बताया के येह मक़ामे "**हुवाब**" का चश्मा है।" इस का नाम सुनते ही उन्हों ने फ़रमाया : "मेरा इरादा है के अब मैं यहीं से वापस चली जाउं।" उन के किसी हमराही ने कहा के "आप चलती रहें, मुसलमान आप को देखेंगे तो हो सकता है के अल्लाह तआ़ला उन के दरमियान सुलह़ करा दे।" ह़ज़रत आ़इशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया : "एक मर्तबा नबीए अकरम ﷺ ने मुझ से फ़रमाया था : "तुम में से एक औ़रत की उस वक़्त क्या कैफ़ियत होगी जिस पर मक़ामे "**हुवाब**" के कुत्ते भोंकेंगे"।

(मुस्नद अह़मद : 24229, अस्सिलसिलतुस्सहीहा : 474,
शैख़ अलबानी और शैख़ शुऐब अरनोवत : इस्नाद स़ह़ीह़)

(7)عن عكرمة قال لى ابن عباس ولابنه على انطلقا إلى أبى سعيد فاسمعا من حديثه فانطلقنا فإذا هو فى حائط يصلحه فأخذ رداء ه فاحتبى ثم أنشأ يحدثنا حتى أتى ذكر بناء المسجد فقال كنا نحمل لبنة لبنة

وعـمـار لبـنتين لبنتين فرآه النبى صلى الله عليه وسلم فينفض التراب عنه ويـقـول ويح عمار تقتله الفئة الباغية يدعوهم إلى الجنة ويدعونه إلى النار قـال يـقـول عـمـار أعوذ بالله من الفتن.(صحيح البخارى:2812،صحيح مسلم:7320)

(7) इकरमा ताबई रहमतुल्लाह अलैह केहते हैं के एक दिन इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन से और (अपने स़ाह़बज़ादे) अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया "तुम दोनों अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में जाओ और उन से अह़ादीषे नबवी सुनो।" चुनांचे हम ह़ाज़िर हूए उस वक़्त अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु अपने (रज़ाई) भाई के साथ बाग़ में थे और बाग़ को पानी दे रहे थे जब आप ने हमें देखा तो (हमारे पास) तशरीफ़ लाए और (चादर ओढ़कर) गोट मारकर बैठ गए उसके बा'द बयान फ़रमाया "हम मस्जिदे नबवी की ईंटें (हिजरते नबवी के बा'द ता'मीरे मस्जिद के लिये) एक एक कर के ढो रहे थे लेकिन अ़म्मार रज़ियल्लाहु अन्हु दो दो ईंटें ला रहे थे इतने में नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उधर से गुज़रे और उन के सर से ग़ुबार को स़ाफ़ किया फिर फ़रमाया **"अफ़सोस ! अ़म्मार को एक बाग़ी जमा'त क़त्ल करेगी येह तो उन्हें अल्लाह की (इत़ा'त की) त़रफ़ दा'वत दे रहा होगा लेकिन वोह उसे जहन्नम की त़रफ़ बुला रहे होंगे।"** अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु केहते हैं कि अ़म्मार रज़ियल्लाहु अन्हु कहा करते थे : **मैं फ़ित्ने से अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की पनाह मांगता हूं"।**

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : **2812**, स़ह़ीह़ मुस्लिम : **7320**)

(8)عـن كـلـثـوم بـن جبر قال كنا بواسط القصب عند عبد الاعلى بن عبـد الله بن عامر قال فإذا عنده رجل يقال له أبو الغادية استسقى ماء فاتى بـاناء مفضض فابى أن يشرب وذكر النبى صلى الله عليه وسلم فذكر هذا الـحـديـث لا تـرجـعـوا بعدى كفار أو ضلالا شك ابن أبى عدى يضرب بـعـضـكـم رقـاب بعض فإذا رجل يسب فلانا فقلت والله لئن أمكننى الله منـك فى كتيبة فلما كان يوم صفين إذا أنا به وعليه درع قال ففطنت إلى

الـفـرجة فـي جـريـان الدرع فطعنته فقتلته فإذا هو عمار بن ياسر قال قلت
وأى يـد كـفتـاه يـكـره أن يشـرب في اناء مفضض وقد قتل عمار بن ياسر
(مسـنـداحـمد: 16744،قـال الشيـخ زبيـر عـلـى زئـى والشيـخ شعيب
الأنؤوط:اسناده صحيح).

(8) "कुल्थूम बिन ह़िबर से मरवी है के एक मरतबा हम लोग शहरे वासित़ में अ़ब्दुल आ'ला बिन आ़मिर के पास बैठे हूए थे के उसी दौरान वहां मौजूद एक शख़्स़ जिस का नाम अबू ग़ादिया था ने पानी मंगवाया, चुनांचे चांदी के एक बरतन में पानी लाया गया लेकिन उन्हों ने वोह पानी पीने से इन्कार कर दिया और नबीए करीम ﷺ का ज़िक्र करते हूए येह ह़दीष ज़िक्र की के "मेरे पीछे काफ़िर या गुमराह न हो जाना के एक दूसरे की गर्दनें मारने लगो।" अचानक एक आदमी दूसरे को बुरा भला केहने लगा, मैंने कहा के "अल्लाह ﷻ की क़सम ! अगर अल्लाह ने लश्कर में मुझे तेरे उपर क़ुदरत अ़ता फ़रमाई (तो तुझ से ह़िसाब लूंगा)" जंगे सिफ़्फ़ीन के मौक़ा' पर इत्तिफ़ाक़ा मेरा उस से आमना सामना हो गया, उस ने ज़िरह पेहन रखी थी, लेकिन मैंने ज़िरह की ख़ाली जगहों से उसे शिनाख़्त कर लिया, चुनांचे मैंने उसे नेज़ा मार कर क़त्ल कर दिया, बा'द में पता चला के वोह तो ह़ज़रत अ़म्मार बिन यासिर رضي الله عنه थे, तो मैंने अफ़सोस से कहा के येह कौन से हाथ हैं जो चांदी के बरतन में पानी पीने पर नागवारी का इज़्हार कर रहे हैं जबकी इन्हीं हाथों ने ह़ज़रत अ़म्मार को शहीद कर दिया था"।

(मुस्नद अह़मद : 16744, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शुऐब अरनौवत ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह।)

(9)عـن أبـى بـكـر بـن محمد بن عمرو بن حزم عن أبيه قال لما قتل
عـمـار بن ياسر دخل عمرو بن حزم على عمرو بن العاص فقال قتل عمار
وقـد قال رسول الله صلى الله عليه وسلم تقتله الفئة الباغية فقام عمرو بن
الـعـاص فـزعا يرجع حتى دخل على معاوية فقال له معاوية ما شأنک قال
قتـل عـمـار فقال معاوية قد قتل عمار فماذا قال عمرو سمعت رسول الله

صـلـى الله عليه وسلم يقول تقتله الفئة الباغية فقال له معاوية دحضت فى بـولـک أو نـحـن قتلـنـاه انـما قتله على وأصحابه جاؤا به حتى ألقوه بين رمـاحـنـا أو قـال بيـن سيـوفنا .(مسنداحمد: 17813،قـال الشيـخ شعيب الأنؤوط:اسناده صحيح)

(9) मुहम्मद बिन अम्र ﷺ केहते हैं के जब हज़रत अ़म्मार बिन यासिर ﷺ शहीद हूए तो अम्र बिन हज़्म ﷺ, हज़रत अम्र बिन आ़स़ के पास गए और उन्हें बताया कि हज़रत अ़म्मार ﷺ शहीद हो गए हैं और नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया था के अ़म्मार को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा ? येह सुनकर अम्र बिन आ़स़ ﷺ इन्ना लिल्लाह पढ़ते हूए घबरा कर उठे और अमीर मुआ़विया ﷺ के पास चले गए, मुआ़विया ﷺ ने उन से पूछा कि तुम्हें क्या हुवा ? उन्हों ने बताया के "अ़म्मार शहीद हो गए हैं," मुआ़विया ﷺ ने फ़रमाया "हज़रत अ़म्मार ﷺ तो शहीद हो गए लेकिन तुम्हारी येह ह़ालत !" उन्हों ने कहा के मैंने नबीए करीम ﷺ को येह फ़रमाते हूए सुना है के अ़म्मार ﷺ को बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा," मुआ़विया ﷺ ने कहा के "तुम अपने पेशाब में गिरते, क्या हमने उन्हें क़त्ल किया है ? उन्हें तो हज़रत अली ﷺ और उन के साथियों ने ख़ुद क़त्ल किया है, वही उन्हें ले कर आए और हमारे नेज़ों के दरमियान ला डाला।"

(मुस्नद अह़मद : 17813, शैख़ शुऐ़ब अरनोवत ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(10)عـن حنظلة بن خويلد العنبرى قال بينما أنا عند معاوية إذ جاء ه رجـلان يختصمان فى رأس عمار يقول كل واحد منهما انا قتلته فقال عبد الـلـه ليـطـب به أحدكما نفسا لصاحبه فانى سمعت يعنى رسول الله صلى الـلـه عـليه وسلم كذا قال أبى يعنى رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول تـقتله الفئة الباغية فقال معاوية الا تغنى عنا مجنونـک يا عمرو فما بالـک معـنـا قـال ان أبـى شـكـانى إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لى

رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم أطع أباک ما دام حیا ولا تعصہ فانا معکم ولست أقاتل.(مسنداحمد:6929،قال الشیخ شعیب الأنؤوط:اسنادہ صحیح)

(10) "हन्ज़ला बिन ख़ुवयलिद केहते हैं के एक मर्तबा मैं अमीर मुआ़विया ﷺ के पास बैठा हुवा था दो आदमी उन के पास एक झगड़ा ले कर आए उन में से हर एक का दा'वा येह था कि ह़ज़रत अ़म्मार ﷺ को उस ने शहीद किया है ह़ज़रत इब्ने अम्र ﷺ फ़रमाने लगे के "तुम्हें चाहिए एक दूसरे को मुबारकबाद दो क्यूंकि मैंने नबीए करीम ﷺ को येह फ़रमाते हूए सुना है कि अ़म्मार ﷺ को बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा" अमीर मुआ़विया ﷺ केहने लगे "फिर आप हमारे साथ क्या कर रहे हो ?" उन्हों ने फ़रमाया के ऐक मर्तबा मेरे वालिद स़ाह़ब ने नबीए करीम ﷺ के सामने मेरी शिकायत की थी और नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया था ज़िंदगीभर अपने बाप की इत़ा'त करना उस की नाफ़रमानी न करना इसलिए मैं आप के साथ तो हूं लेकिन लड़ाई में शरीक नहीं होता"।

(मुस्नद अह़मद : 6929, शैख़ शुऐ़ब अरनोवत : इस्नाद स़ह़ीह़)

(11)عن أبی غادیة قال قتل عمار بن یاسر فاخبر عمرو بن العاص قال سمعت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم یقول ان قاتلہ وسالبہ فی النار فقیل لعمرو فانک ھو ذا تقاتلہ قال انما قال قاتلہ وسالبہ .(مسند أحمد:17811،قال الشیخ شعیب الأنؤوط:اسنادہ صحیح)

(11) "अबू ग़ादिया बयान करता हैं कि जब अ़म्मार बिन यासिर ﷺ शहीद कर दिये गए तो उन्हों ने अम्र बिन आ़स़ को ख़बर दी और बताया के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को येह इरशाद फ़रमाते सुना है के अ़म्मार ﷺ का क़त्ल और उन का सामान लूटनेवाला जहन्नमी है।" अम्र बिन आ़स़ से कहा गया के आप ही तो उन से जंग कर रहे थे । अम्र ने जवाब दिया : रसूलुल्लाह ﷺ ने येह फ़रमाया था : उन को क़त्ल करने और उन का सामान लूटने वाला जहन्नम में जाएगा।"

(मुस्नद अह़मद : 17811, शैख़ शुऐ़ब अरनोवत : इस्नाद स़ह़ीह़)

(12)عن أبی سعید الخدری قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم تکون فی أمتی فرقتان فتخرج من بینهما مارقة یلی قتلهم أولاهم بالحق. (صحیح مسلم:2459)

(12) सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी ﵁ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मेरी उम्मत में दो गिरोह हो जाएंगे। फिर उन दोनों के दरमियान से एक तीसरा गिरोह निकलेगा, जिसे दोनों में वोह गिरोह क़त्ल करेगा जो हक़ के ज़ियादा क़रीब होगा"।

(सहीह मुस्लिम : 2459)

(13)عن أبی سعید الخدری قال بینا نحن عند رسول الله صلی الله علیه وسلم وهو یقسم قسما أتاه ذو الخویصرة وهو رجل من بنی تمیم فقال یا رسول الله اعدل قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ویلک ومن یعدل إن لم أعدل قد خبت وخسرت إن لم أعدل فقال عمر بن الخطاب رضی الله عنه یا رسول الله ائذن لی فیه أضرب عنقه قال رسول الله صلی الله علیه وسلم دعه فإن له أصحابا یحقر أحدکم صلاته مع صلاتهم وصیامه مع صیامهم یقرءون القرآن لا یجاوز تراقیهم یمرقون من الإسلام کما یمرق السهم من الرمیة ینظر إلی نصله فلا یوجد فیه شیء ثم ینظر إلی رصافه فلا یوجد فیه شیء ثم ینظر إلی نضیه فلا یوجد فیه شیء وهو القدح ثم ینظر إلی قذذه فلا یوجد فیه شیء سبق الفرث والدم آیتهم رجل أسود إحدی عضدیه مثل ثدی المرأة أو مثل البضعة تتدردر یخرجون علی حین فرقة من الناس قال أبو سعید فأشهد أنی سمعت هذا من رسول الله صلی الله علیه وسلم وأشهد أن علی بن أبی طالب رضی الله عنه قاتلهم وأنا معه فأمر بذلک الرجل فالتمس فوجد فأتی به حتی

نظرت إليه على نعت رسول الله صلى الله عليه وسلم الذى نعت.
(صحيح البخارى:6933،صحيح مسلم:2456)

(13) अबू सईद ﷺ ने बयान किया के नबीए करीम ﷺ तक़्सीम फरमा रहे थे के अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ील ख़ुवैस़रा तमीमी आया और कहा "या रसूलुल्लाह ﷺ ! इन्स़ाफ़ कीजिए।" आं ह़ज़रत ﷺ ने फ़रमाया "अफ़सोस अगर मैं इन्स़ाफ़ नहीं करूंगा तो और कौन करेगा।" इस पर ह़ज़रत उ़मर बिन अल ख़त्ताब ﷺ ने कहा के मुझे इजाज़त दीजिए के मैं इस की गरदन मार दूं। आं ह़ज़रत ﷺ ने फ़रमाया के नहीं इस के कुछ ऐसे साथी होंगे के उन की नमाज़ और रोज़े के सामने तुम अपनी नमाज़ और रोज़े को ह़क़ीर समझोगे लेकिन वोह दीन से इस त़रह़ बाहर हो जाएंगे जिस त़रह़ तीर जानवर से बाहर निकल जाता है। तीर के पर को देखा जाए लेकिन उस पर कोई निशान नहीं फिर उस पयकान को देखा जाए और वहां भी कोई निशान नहीं फिर उस के बाड को देखा जाए और यहां भी कोई निशान नहीं फिर उस के लकड़ी को देखा जाए और वहां भी कोई निशान नहीं क्यूंकि वोह (जानवर के जिस्म से तीर चलाया गया था) लीद गोबर और ख़ून सब से आगे (बेदाग़) निकल गया (इसी त़रह़ वोह लोग इस्लाम से स़ाफ़ निकल जाएंगे) उन की निशानी एक मर्द होगा जिस का एक हाथ औ़रत की छाती की त़रह़ या यूं फ़रमाया कि गोश्त के थलथल करते लोथड़े की त़रह़ होगा। येह लोग मुसलमानों में फूट के ज़माने में पैदा होंगे।" ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी ﷺ ने कहा के मैं गवाही देता हूं के मैंने येह ह़दीष नबीए करीम ﷺ से सुनी है और मैं गवाही देता हूं की ह़ज़रत अ़ली ﷺ ने नहरवान में उन से जंग की थी और मैं उस जंग में उन के साथ था और उन के पास उन लोगों के एक शख़्स को क़ैदी बना कर लाया गया तो उस में वही तमाम चीज़ें थीं जो नबीए करीम ﷺ ने बयान फ़रमाई थीं"।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 6933, स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2456)

(14)عن عقبة بن عامر قال صلى رسول الله صلى الله عليه وسلم على قتلى أحد بعد ثمانى سنين كالمودع للأحياء والأموات ثم طلع

المنبر فقال إني بين أيديكم فرط وأنا عليكم شهيد وإن موعدكم الحوض وإني لأنظر إليه من مقامي هذا وإني لست أخشى عليكم أن تشركوا ولكني أخشى عليكم الدنيا أن تنافسوها قال فكانت آخر نظرة نظرتها إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم.(صحيح البخارى:4042،صحيح مسلم:5977)

---

(14) "ह़ज़रत अक़बा बिन आ़मिर ﷺ ने बयान किया है रसूलुल्लाह ﷺ ने आठ साल बा'द या'नी आठवें बरस में ग़ज़्वए उहद के शुहदा पर नमाज़े जनाज़ा अदा की, जैसे आप ज़िन्दों और मुर्दों सब से रुख़्सत हो रहे हों। उस के बा'द आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़रमाया, "मैं तुम से आगे आगे हूं, मैं तुम पर गवाह रहूंगा और मुझ से (क़यामत के दिन) तुम्हारी मुलाक़ात ह़ौज़े (कौषर) पर होगी। इस वक़्त भी मैं अपनी इस जगह से ह़ौज़ (कौषर) को देख रहा हूं। तुम्हारे बारे में मुझे इस का कोई ख़त़रा नहीं है के तुम शिर्क करोगे, हां में तुम्हारे बारे में दुनिया से डरता हूं के तुम कहीं दुनिया के लिये आपस में मुक़ाबला न करने लगो।" उ़क़बा बिन आ़मिर ﷺ ने बयान किया के मेरे लिये रसूलुल्लाह ﷺ का येह आख़री दीदार था जो मुझ को नस़ीब हुवा"।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 4042, स़ह़ीह़ मुस्लिम : 5977)

(15)عن عبد الرحمن بن عبد رب الكعبة قال دخلت المسجد فإذا عبد الله بن عمرو بن العاص جالس في ظل الكعبة والناس مجتمعون عليه فأتيتهم فجلست إليه فقال كنا مع رسول الله صلى الله عليه وسلم في سفر فنزلنا منزلا فمنا من يصلح خباءه ومنا من ينتضل ومنا من هو في جشره إذ نادى منادى رسول الله صلى الله عليه وسلم الصلاة جامعة فاجتمعنا إلى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال إنه لم يكن نبي قبلي إلا كان حقا عليه أن يدل أمته على خير ما يعلمه لهم وينذرهم شر ما يعلمه

لهم وإن أمتكم هذه جعل عافيتها فى أولها وسيصيب آخرها بلاء وأمور تنكرونها وتجيء فتنة فيرقق بعضها بعضا وتجيء الفتنة فيقول المؤمن هذه مهلكتى ثم تنكشف وتجيء الفتنة فيقول المؤمن هذه هذه فمن أحب أن يزحزح عن النار ويدخل الجنة فلتأته منيته وهو يؤمن بالله واليوم الآخر وليأت إلى الناس الذى يحب أن يؤتى إليه ومن بايع إماما فأعطاه صفقة يده وثمرة قلبه فليطعه إن استطاع فإن جاء آخر ينازعه فاضربوا عنق الآخر فدنوت منه فقلت له أنشدك الله آنت سمعت هذا من رسول الله صلى الله عليه وسلم فأهوى إلى أذنيه وقلبه بيديه وقال سمعته أذناى ووعاه قلبى فقلت له هذا ابن عمك معاوية يأمرنا أن نأكل أموالنا بيننا بالباطل ونقتل أنفسنا والله يقول يا أيها الذين آمنوا لا تأكلوا أموالكم بينكم بالباطل إلا أن تكون تجارة عن تراض منكم ولا تقتلوا أنفسكم إن الله كان بكم رحيما قال فسكت ساعة ثم قال أطعه فى طاعة الله واعصه فى معصية الله.(صحيح مسلم:4776)

(15) "अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दे रब्बुल का'बा ﷺ बयान करते हैं के मैं मस्जिद में दाख़िल हुवा तो देखा के अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आ़स़ ﷺ का'बा के साये में बैठे हूए थे और लोग उन के इर्दगिर्द जमअ़ थे मैं उन के पास आया और उन के पास बैठ गया तो अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने कहा, "हम एक सफ़र में रसूलुल्लाह ﷺ के साथ थे हम एक जगह रुके हम में से बा'ज़ ने अपना ख़ैमा लगाना शुरूअ़ कर दिया और बा'ज़ तीरंदाज़ी करने लगे और बा'ज़ वोह थे जो जानवरों में ठेहरे रहे इतने में रसूलुल्लाह ﷺ के मुनादी ने आवाज़ दी 'अस़्स़लातु जामिआ़' (या'नी नमाज़ का वक़्त हो गया है) वो हम रसूलुल्लाह ﷺ के पास जमअ़ हो गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया मेरे से क़ब्ल कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिस के ज़िम्मे अपने इ़ल्म के मुत़ाबिक़ अपनी उम्मत की भलाई की त़रफ़ रहनुमाई लाज़िम न हो और बुराई से अपने इ़ल्म के

मुताबिक़ उन्हें डराना लाज़िम न हो और बेशक तुम्हारी इस उम्मत की आ़फ़ियत इब्तिदाई ह़िस्से में है और उस का आख़िर ऐसी मुसीबतों और उमूर में मुब्तिला होगा जिसे तुम नापसंद करते हो और ऐसा फ़ित्ना आएगा के मोमिन कहेगा येह मेरी हलाकत है फिर वोह ख़त्म हो जाएगा और दूसरा ज़ाहिर होगा तो मोमिन कहेगा यही मेरी हलाकत का ज़रिआ़ होगा जिस को येह बात पसंद हो के उसे जहन्नम से दूर रखा जाए और जन्नत में दाख़िल किया जाए तो चाहिये के उस की मौत इस ह़ाल में आए के वोह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो और लोगों के साथ इस मुआ़मले से पेश आए जिस के दिये जाने को अपने लिये पसंद करे और जिस ने इमाम के हाथ में हाथ दे कर दिल के इख़्लास़ से बै'त की तो चहिये के अपनी त़ाक़त के मुत़ाबिक़ उस की इत़ा'त करे और अगर दूसरा शख़्स़ उस से झगड़ा करे तो दूसरे की गरदन मार दो। रावी केहता है फिर मैं अ़ब्दुल्लाह ﷺ के क़रीब हो गया और उन से कहा, "मैं तुझे अल्लाह की क़सम दे कर केहता हूं क्या आप ने येह ह़दीष रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी है" तो अ़ब्दुल्लाह ﷺ ने अपने कानों और दिल की त़रफ़ अपने हाथ से इशारा कर के फ़रमाया "मेरे कानों ने आप ﷺ से सुना और मेरे दिल ने उसे मेह़फ़ूज़ रखा" तो मैंने उन से कहा येह आप ﷺ के चचाज़ाद भाई मुआ़विया ﷺ हमें अपने अमवाल को नाजाइज़ त़रीक़े पर खाने और अपनी जानों को क़त्ल करने का हुकम देते हैं और अल्लाह ﷻ का इर्शाद है 'अय इमानवालों ! अपने अमवाल को नाजाइज़ त़रीक़े से न खाओ सिवाए उस के के ऐसी तिजारत हो जो बाहमी रज़ामंदी से की जाए और न अपनी जानों को क़त्ल करो बेशक अल्लाह तुम पर रहम फ़रमानेवाला है।" रावी ने कहा अ़ब्दुल्लाह ﷺ थोड़ी देर ख़ामोश रहे फिर कहा "अल्लाह ﷻ की इताअत में उन की इताअत करो और अल्लाह ﷻ की नाफ़रमानी में उन की नाफ़रमानी करो"।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : 4776)

(16)عن أبى قلابة قال كنت بالشام فى حلقة فيها مسلم بن يسار فجاء أبو الأشعث قال قالوا أبو الأشعث أبو الأشعث فجلس فقلت له حدث أخانا حديث عبادة بن الصامت قال نعم غزونا غزاة وعلى الناس معاوية فغنمنا غنائم كثيرة فكان فيما غنمنا آنية من فضة فأمر معاوية رجلا

أن يبيعها في أعطيات الناس فتسارع الناس في ذلك فبلغ عبادة بن الصامت فقام فقال إني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم ينهى عن بيع الذهب بالذهب والفضة بالفضة والبر بالبر والشعير بالشعير والتمر بالتمر والملح بالملح إلا سواء بسواء عينا بعين فمن زاد أو ازداد فقد أربى فرد الناس ما أخذوا فبلغ ذلك معاوية فقام خطيبا فقال ألا ما بال رجال يتحدثون عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أحاديث قد كنا نشهده ونصحبه فلم نسمعها منه فقام عبادة بن الصامت فأعاد القصة ثم قال لنحدثن بما سمعنا من رسول الله صلى الله عليه وسلم وإن كره معاوية أو قال وإن رغم ما أبالي أن لا أصحبه في جنده ليلة سوداء قال حماد هذا أو نحوه .(صحيح مسلم:4061)

---

(16) “बू क़लाबा बयान करते हैं : मैं शाम में एक मजलिस में था जिस में मुस्लिम बिन यसार भी थे, इतने में अबू अशअ़ष आए तो लोगों ने कहा : अबू अशअ़ष, (आ गए) मैंने कहा : (अच्छा) अबू अशअ़ष ! वोह बैठ गए तो मैंने उन से कहा : हमारे भाई ! हमें ह़ज़रत उ़बादा बिन स़ामित ﷺ की ह़दीष बयान कीजिए। उन्हों ने कहा : हां, हम ने एक गज़वा लड़ा और लोगों के अमीर मुआ़विया ﷺ ने एक आदमी को हुकम दिया के वोह उन्हें लोगों को मिलने वाले अ़तिय्यात (के बदले) में फ़रोख़्त कर दे। (जब अ़तिय्यात मिलेंगे तो क़ीमत उस वक़्त दिराहम की सूरत में ले ली जाएगी) लोगो ने उन (को ख़रीद ने) में जल्दी की। येह बात ह़ज़रत अ़ब्बास बिन स़ामित ﷺ को चहोंची तो वोह खड़े हूए और कहा : मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना, “आप ﷺ सोने के इ़वज़ सोने की, चांदी के इ़वज़ चांदी का, बैअ़ से मनाअ़ फ़रमा रहे थे। इ़ल्ला येह के बराबर बराबर, नक़द नक़द हो। जिस ने जियादा दिया या जियादा लिया तो उस ने सूद का लेन देन किया ।” (येह सुन कर) लोगों ने जो लिया था वापिस कर दिया। मुआ़विया ﷺ को येह बात पहोंची तो वोह ख़ुत़बा देने के ल लिये खड़े हुए और कहा : “सुनो ! लोगों का ह़ाल क्या है ? वोह

रसूलुल्लाह ﷺ से अहादीष बयान करते हैं, हम भी आप ﷺ के पास हाज़िर होते और आप ﷺ के साथ रेहते थे लेकिन हम ने आप ﷺ से वोह (अहादीष) नहीं सुनीं।" इस पर उबादा बीन सामित رضي الله عنه खड़े हो गए, (रसूलुल्लाह ﷺ से सुना हुवा) सारा वाक़िआ दोहराया और कहा : **"हम वोह अहादीष ज़रूर बयान करेंगे जो हम ने रसूलुल्लाह ﷺ से सुनी, ख़्वाह मुआविया رضي الله عنه येह नापसंद करें.....या कहा : ख़्वाह उन की नाक ख़ाक आलूद हो। मुझे परवा नहीं कि मैं उन के लश्कर में उन के साथ एक स्याह रात भी ना रहूं।"** हम्माद ने कहा : येह (कहा :) या उस के हम मा'ना"।

(सहीह मुस्लिम : 4061)

(17)عن خالد قال وفد المقدام بن معدى كرب وعمرو بن الأسود ورجل من بنى أسد من أهل قنسرين إلى معاوية بن أبى سفيان فقال معاوية للمقدام أعلمت أن الحسن بن على توفى فرجع المقدام فقال له رجل أتراها مصيبة قال له ولم لا أراها مصيبة وقد وضعه رسول الله صلى الله عليه وسلم فى حجره فقال هذا منى وحسين من على فقال الأسدى جمرة أطفأها الله عز وجل قال فقال المقدام أما أنا فلا أبرح اليوم حتى أغيظك وأسمعك ما تكره ثم قال يا معاوية إن أنا صدقت فصدقنى وإن أنا كذبت فكذبنى قال أفعل قال فأنشدك بالله هل تعلم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن لبس الذهب قال نعم قال فأنشدك بالله هل تعلم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن لبس الحرير قال نعم قال فأنشدك بالله هل تعلم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم نهى عن لبس جلود السباع والركوب عليها قال نعم قال فوالله لقد رأيت هذا كله فى بيتك يا معاوية فقال معاوية قد علمت أنى لن أنجو منك يا مقدام قال خالد فأمر له معاوية بما لم يأمر لصاحبيه وفرض لابنه فى المائتين ففرقها المقدام فى أصحابه.(سنن أبى داود: 4131،قال الشيخ زبير على زئى والشيخ الالبانى:اسناده صحيح)

(17) सय्यिदना मिक़दाम बिन मअदीकर्ब رضي الله عنه, अम्र बिन अस्वद और क़बीला बनू असद का एक आदमी जो एहले क़न्सरीन में से था, मुआ़विया बिन अबू सुफ़ियान رضي الله عنه के यहां आए। मुआ़विया رضي الله عنه ने मिक़दाम رضي الله عنه से कहा : "क्या तुम्हें मा'लूम है कि ह़सन बिन अ़ली رضي الله عنه वफ़ात पा गए हैं ?" तो मिक़दाम رضي الله عنه ने انا لله وانا اليه راجعون पढ़ा। तो एक आदमी ने उन से कहा : "क्या तुम इस को मुस़ीबत समझते हो ?" उन्हों ने कहा : "मैं उन की वफ़ात को मुस़ीबत क्यूं न समझूं जबके रसूलुल्लाह ﷺ ने उन को अपनी गोद में बिठाया था और कहा था : **"येह (ह़सन) मुझ से है और ह़ुसैन अ़ली से है"** असदी आदमी ने कहा : جمرة أطفاها الله عز وجل मिक़दाम رضي الله عنه ने कहा : "मगर (मैं तो ऐसी बात नहीं कहता जो इस असदी ने कही है।) मैं आज तुम्हें ग़ुस्सा दिला के रहूंगा और वोह कुछ सुनाउंगा जो तुम्हें बुरा लगे।" फिर कहा : "अय मुआ़विया رضي الله عنه ! अगर मैं सच कहूं तो मेरी तस्दीक़ करना और अगर ग़लत़ कहूं तो तरदीद कर देना ।" मुआ़विया رضي الله عنه ने कहा : "ऐसे ही करुंगा ।" मिक़दाम رضي الله عنه ने कहा : "मैं तुम्हें अल्लाह عزوجل की क़सम दे कर केहता हूं क्या तुम जानते हो के रसूलंल्लाह ﷺ ने सोना पेहनने से मना फ़रमाया है ?" कहा "हां" मिक़दाम رضي الله عنه ने फिर कहा : "मैं तुम्हें अल्लाह عزوجل की कसम दे कर केहता हूं क्या तुम्हें ख़बर है के रसूलुल्लाह ﷺ ने रेशम पेहनने से रोका है ?" उन्हों ने कहा : "हां" सय्यिदना मिक़दाम رضي الله عنه ने कहा : मैं तुम्हें अल्लाह عزوجل की क़सम दे कर केहता हूं, क्या तुम जानते हो के रसूलुल्लाह ﷺ ने दरिन्दों की खालें पेहनने और उन पर सोने से रोका है।" कहा "हां" । मिक़दाम رضي الله عنه ने कहा : "अल्लाह عزوجل की क़सम ! मैं येह सब कुछ तुम्हारे घर में देखता हूँ । अय मुआ़विया رضي الله عنه !" इस पर मुआ़विया رضي الله عنه ने कहा : "अय मिक़दाम رضي الله عنه ! मुझे मा'लूम था के तुझ से हरगिज़ नहीं बच सकूंगा।" ख़ालिद बिन म'दान ने बयान किया के फिर मुआ़विया رضي الله عنه ने मिक़दाम رضي الله عنه के लिये इस क़दर इन्आ़म का हुकम दिया जो उस के दूसरे वो साथीयों के लिये नहीं था और उन के बेटे के लिये दो सो वालों में हिस़्सा मुक़र्रर कर दिया। चुनांचे सय्यिदना मिक़दाम رضي الله عنه ने उसे अपने साथीयों में तक़्सीम कर दिया"।

(सुनन अबी दाउद : 4131, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ नासिरुद्दीन अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(18)عـن زيـد بـن أرقم قال قام رسول الله صلى الله عليه وسلم يوما فيـنـا خـطيبـا بـمـاء يـدعـى خـما بين مكة والمدينة فحمد الله وأثنى عليه ووعـظ وذكـر ثـم قال اما بعد ألا أيها الناس فإنما أنا بشر يوشک أن يأتى رسـول ربـى فـأجيب وأنا تارک فيكم ثقلين أولهما كتاب الله فيه الهدى والـنـور فـخذوا بكتاب الله واستمسكوا به فحث على كتاب الله ورغب فيه ثم قال وأهل بيتى أذكركم الله فى أهل بيتى أذكركم الله فى أهل بيتى أذكـركـم الـلـه فـى أهـل بيتـى فـقال له حصين ومن أهل بيته يا زيد أليس نسـاؤه مـن أهـل بيتـه قـال نسـاؤه مـن أهـل بيتـه ولـكن أهل بيته من حرم الـصـدقة بـعـده قـال ومـن هم قال هم آل على وآل عقيل وآل جعفر وآل عباس قال كل هؤلاء حرم الصدقة قال نعم .(صحيح مسلم:6225)

(18) हज़रत ज़ैद बिन अरक़म ﷺ ने फ़रमाया के “रसूलुल्लाह ﷺ एक दिन मक्का और मदीना के दरमियान वाक़ेअ़ मक़ाम ख़ुम के पानी के मक़ाम पर ख़ुतबा सुनाने को खड़े हूए। आप ﷺ ने अल्लाह की ह़म्द की और उस की ता’रीफ को बयान किया और वा’ज़ो नसीह़त की। उसके बाद फिर फ़रमाया के “अय लोगो ! मैं आदमी हूं, क़रीब है कि मेरे रब का भेजा हुवा (मौत का फ़रिश्ता) पैग़ामे अजल लाए और में क़ुबूल कर लूं। **मैं तुम में दो बड़ी चीज़ें छोड़े जाता हूं। पेहली तो अल्लाह की किताब** है और इस में हिदायत है और नूर है। तो अल्लाह ﷻ की किताब को थामे रहो और इस को मज़बूत़ पकड़े रहो। ग़र्ज़ के आप ﷺ ने अल्लाह ﷻ की किताब की त़रफ़ रग़बत दिलाई। फिर फ़रमाया के **दूसरी चीज़ मेरे एहले बैत हैं। मैं तुम्हें अपने एहले बैत के बारे में अल्लाह तआ़ला याद दिलाता हूं।**” तीन बार फ़रमाया : “और ह़सीन ने कहा के “अय ज़ैद ! आप ﷺ के एहले बैत कौन से हैं, क्या आप ﷺ की अज़वाजे मुत़हिरात एहले बैत नहीं ?” सय्यिदना ज़ैद ﷺ ने कहा के “अज़वाजे मुत़हिरात भी एहले बैत में दाख़िल हैं लेकिन एहले बैत वो हैं जिन पर ज़कात (सदक़ा) हराम है।” ह़सीन ने कहा के वोह कौन लोग हैं ?” सय्यिदना ज़ैद ﷺ ने कहा

के "वोह अ़ली, अ़क़ील, जा'फ़र और अ़ब्बास ﷺ हैं।" ह़सीन ने कहा के उन सब पर स़दक़ा ह़राम है ? सय्यिदना ज़ैद ﷺ ने कहा के "हां"।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : 6225)

(19)وفـي روايـة السـنـة لابـن أبـي عـاصـم:فـقـال:أيهـا الناس!ألستم تشهـدون أن الـلـه ربـكـم؟قالوا:بلى.قال:ألستم تشهدون أن الله ورسوله أولـى بـكـم مـن أنـفسـكـم؟قـالـوا:بـلـى.وأن الـلـه ورسـولـه مولاكم قـالـوا:بـلـى.قـال:فـمـن كـنـت مـولاه فـان هذا مولاه.(السنة لابن أبي عاصم:1158،قال الشيخ زبير علي زئي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

---

(19) इब्ने अबी आ़सि़म की किताब "अस्सुन्नाह" की एक रिवायत में है : नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया : "क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते के अल्लाह ﷻ तुम्हारा रब है ?" लोगों ने जवाब दिया : "हां, क्यूं नहीं।" आप ने फ़रमाया : "क्या तुम इस बात की गवाही नहीं देते के अल्लाह ﷻ और उस के रसूल ﷺ तुम्हारी अपनी जानों से ज़ियादा तुम से क़रीब है ?" लोगों ने जवाब दिया : "हां क्यूं नहीं।" आप ﷺ ने फ़रमाया : "क्या अल्लाह ﷻ और उस के रसूल ﷺ तुम्हारे वली नहीं हैं ?" लोगों ने जवाब दिया : "हां।" आप ﷺ ने फ़रमाया : **"पस मैं जिस का मौला हूं, अ़ली भी उस के मौला हैं।"**

(अस्सुनन लि इब्ने अबी आ़सि़म : 1158, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ नासिरुद्दीन अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(20)وفـي روايـة الـتـرمـذي:قـال:مـن كـنـت مولاه فعلي مولاه.(سنن الـتـرمـذي: 3713،قـال الشيـخ زبيـر عـلـي زئـي والشيـخ الالبـاني:اسناده صحيح)

---

(20) **"तिरमिज़ी की एक रिवायत में है: मैं जिस का मौला हूं, अ़ली भी उस के मौला हैं"।**

(सुनन तिरमिज़ी : 3713, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(21)عن صفية بنت شبية قالت قالت عائشة خرج النبی صلی الله علیه وسلم غداة وعلیه مرط مرحل من شعر اسود فجاء الحسن بن علی فادخله ثم جاء الحسین فدخل معه ثم جاء ت فاطمة فادخلها ثم جاء علی فادخله ثم قال انما یرید الله لیذهب عنکم الرجس اهل البیت ویطهرکم تطهیرا.(صحیح مسلم:6261)

(21) उम्मुल मु'मिनीन आ़इशा सिद्दीक़ा ﵂ केहती हैं के "रसूलुल्लाह ﷺ सुबह़ को निकले और आप ﷺ एक चादर ओढ़े हूए थे जिस पर कजावों की सूरतें या हांडियों की सूरतें बनी हूई थीं। इतने में सय्यिदना ह़सन ﵁ आए तो आप ﷺ ने उन को उस चादर के अंदर कर लिया। फिर सय्यिदना हुसैन ﵁ आए तो उन को भी उस में दाख़िल कर लिया। फिर सय्यिदना फ़ातिमतुज़्ज़हरा ﵂ आईं तो उन को भी उन्ही के साथ शामिल कर लिया फिर सय्यिदना अ़ली ﵁ आए तो उन को भी शामिल कर के फ़रमाया के **अल्लाह तआ़ला चाहता है कि तुम से नापाकी को दूर करे और तुम को पाक करे अय घर वालो।"** (अल अह़ज़ाब : 33)

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : **6261**)

(22)قال علی والذی فلق الحبة وبرأ النسمة انه لعهد النبی الامی صلی الله علیه وسلم إلی ان لا یحبنی الا مؤمن ولا یبغضنی الا منافق.(صحیح مسلم:240)

(22) ह़ज़रत अ़ली ﵁ ने कहा : "उस ज़ात की क़सम जिसने दाने को फ़ाड़ो और रुह़ को तख़्लीक़ किया ! नबीयुल उम्मी ﷺ ने मुझे बता दिया था के मेरे साथ मोमिन के सिवा कोई मुह़ब्बत नहीं करेगा और मुनाफ़िक़ के सिवा कोई बुग़्ज़ नहीं रखेगा"।

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : **240**)

(23)عن ابی سعید قال کان بین خالد بن الولید وبین عبد الرحمن بن عوف شیء فسبه خالد فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم لا تسبوا

احدا من اصحابی فان احدکم لو انفق مثل احد ذهبا ما ادرک مد احدهم ولا نصیفه (صحیح البخاری:3673،صحیح مسلم:6488)

(23) हज़रत अबू सईद (ख़ुदरी) ﷺ बयान करते हैं के "हज़रत ख़ालिद बिन वलीद ﷺ और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ﷺ के दरमियान कोई मुनाक़शा था, हज़रत ख़ालिद ﷺ ने उन को बुरा कहा : तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : मेरे सहाबाए किराम ﷺ में से किसी को बुरा न कहो, क्यूंके तुम में से किसी शख़्स ने अगर उहद पहाड़ के बराबर सोना भी ख़र्च किया तो वोह उन में से किसी के दिये हूए एक मद के बराबर बल्कि उस के आधे के बराबर भी (अज़्र) नहीं पा सकता"।

(सहीह बुख़ारी : **3673**, सहीह मुस्लिम : **6488**)

(24)عن عائشة قالت:قال النبی ﷺ :لاتسبوا الأموات فانهم قد أفضوا الی ما قدموا.(صحیح البخاری:1393)

(24) उम्मुल मु'मिनीन आइशा ﷺ बयान करती हैं के नबीए करीम ﷺ ने फ़रमाया, "मुर्दों को बुरा न कहो क्यूंकि उन्हों ने जैसा अमल किया उस का बदला पा लिया"।

(सहीह बुख़ारी : **1393**)

(25)عن سهل بن سعد قال استعمل علی المدینة رجل من آل مروان قال فدعا سهل بن سعد فأمره ان یشتم علیا قال فابی سهل فقال له اما إذ ابیت فقل لعن الله ابا التراب فقال سهل ما کان لعلی اسم احب إلیه من ابی التراب وان کان لیفرح إذا دعی بها فقال له اخبرنا عن قصته لم سمی ابا تراب قال جاء رسول الله صلی الله علیه وسلم بیت فاطمة فلم یجد علیا فی البیت فقال این ابن عمک فقالت کان بینی وبینه شء فغاضبنی فخرج فلم یقل عندی فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم لانسان انظر این هو فجاء فقال یارسول الله هو فی المسجد راقد فجاءہ رسول الله

صلی الله علیه وسلم وهو مضطجع قد سقط رداء ه عن شقه فأصابه تراب فجعل رسول الله صلی الله علیه وسلم یمسحه عنه ویقول قم ابا التراب قم ابا التراب.(صحیح البخاری:3703،صحیح مسلم:6229)

(25) हज़रत सहल बिन सअ़द ﷺ बयान करते हैं के "मदीना में मरवान की अवलाद में से एक शख़्स हाकिम हुवा तो उस ने सय्यिदना सहल ﷺ को बुलाया और सय्यिदना अ़ली ﷺ को गाली देने का हुकम दिया। सय्यिदना सहल ﷺ ने इन्कार किया तो वोह शख़्स बोला के अगर तू गाली देने से इन्कार करता है तो केह के अबू तुराब से ज़ियादा कोई नाम पसंद न था और वोह इस नाम के साथ पुकार ने वाले शख़्स से ख़ूश होते थे।" वोह शख़्स बोला के उस का क़िस्सा बयान करो के उन का नाम अबू तुराब क्यूं हुवा ?" सय्यिदना सहल ﷺ ने कहा के रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदना फ़ातिमतुज़्ज़हरा ﷺ के घर तशरीफ़ लाए तो सय्यिदना अ़ली ﷺ को घर में न पाया, आप ﷺ ने पूछा के तेरे चचा का बेटा कहां है ? 'वोह बोलीं के मुझ में और उन में कुछ बातें हूईं और वोह ग़ुस्सा होकर चले गए और यहां नहीं सोए ।' रसूलुल्लाह ﷺ ने एक आदमी से फ़रमाया के देखो वोह कहां है ? वोह आया और बोला के या रसूलुल्लाह ﷺ ! अ़ली मस्जिद में सो रहे हैं । आप ﷺ सय्यिदना अ़ली ﷺ के पास तशरीफ़ ले गए, वोह लेटे हूए थे और चादर उन के पेहलू से अलग हो गई थी और (उन के बदन से) मिट्टी लग गई थी, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने वो मिट्टी पोंछना शुरूअ़ की और फ़रमाने लगे के **अय अबु तुराब ! उठ । अय अबू तुराब ! उठ ।"**

(सहीह बुख़ारी : 3703, सहीह मुस्लिम : 6229)

(26)عن عامر بن سعد بن ابی وقاص عن ابیه قال امر معاویة بن ابی سفیان سعدا فقال ما منعک ان تسب ابا التراب فقال اما ما ذکرت ثلاثا قالهن له رسول الله صلی الله علیه وسلم فلن اسبه لان تکون لی واحدة منهن احب إلی من حمر النعم سمعت رسول الله صلی الله علیه وسلم یقول له خلفه فی بعض مغازیه فقال له علی یارسول الله خلفتنی مع النساء

والصبيان فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم اما ترضى ان تكون منى بـمـنـزلة هـارون مـن مـوسـى الا انه لا نبوة بعدى وسمعته يقول يوم خيبر لاعـطيـن الـراية رجـلا يحب الله ورسوله ويحبه الله ورسوله قال فتطاولنا لهـا فـقال ادعوا لى عليا فاتى به ارمد فبصق فى عينه ودفع الراية إليه ففتح الـلـه عـليـه ولـمـا نـزلـت هذه الآية فقل تعالوا ندع ابناء نا وابناء كم دعا رسـول الـله صلى الله عليه وسلم عليا وفاطمة وحسنا وحسينا فقال اللهم هؤلاء اهلى .(صحيح مسلم:6220)

(26) आ़मिर बिन सा'द बिन अबी वक़्क़ास़ अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि "मुआ़विया बिन अबी सुफ़ियान ﷺ ने हज़रत सा'द ﷺ को हुकम दिया, कहा : **"आप को इस से क्या चीज़ रोकती है कि आप अबू तुराब (ह़ज़रत अ़ली बिन अबी त़ालिब ﷺ) को बुरा कहें।"** उन्हों ने जवाब दिया : "जब तक मुझे वोह तीन बातें याद हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन (ह़ज़रत अ़ली ﷺ) से कही थीं, में हरगिज़ उन्हें बुरा नहीं कहूंगा। उन में से कोई एक बात भी मेरे लिए होतो वोह मुझे सुर्ख़ उंटों से ज़ियादा पसंद होगी, मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से सुना था, आप ﷺ उन से (उस वक़्त) केह रहे थे जब आप एक जंग में उन को पीछे छोड़ कर जा रहे थे और अ़ली ﷺ ने उन से कहा था : 'अल्लाह के रसूल ﷺ ! आप मुझे औरतों और बच्चों में पीछे छोड़कर जा रहे हैं ?' तो रसूलुल्लाह ﷺ ने उन से फ़रमाया : **'तुम्हें येह पसंद नही कि तुम्हारा मेरे साथ वही मक़ाम हो जो ह़ज़रत हारून ﷺ का मुसा ﷺ के साथ था, मगर मेरे बा'द नबुव्वत नही है।'** इसी त़रह़ ख़ैबर के दिन मैंने आप ﷺ को येह केहते हुए सुना था : **'अब मैं झंडा उस शख़्स को दूंगा जो अल्लाह और उस के रसूल ﷺ ! से मुह़ब्बत करता है और अल्लाह और उस का रसूल ﷺ उस से मुह़ब्बत करते हैं।'** कहा : फिर हम ने इस बात का (मिस्दाक़ जानने) के लिए अपनी गरदनें उठा उठा कर (हर त़रफ़) देखा तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : 'अ़ली ﷺ को मेरे पास बुलाओ। उन्हें शदीद आशूबे चश्म की ह़ालत में लाया गया। आप ﷺ ने उन की आंखों में अपना लुआ़बे दहन लगाया और झंडा

उन्हें अ़त़ा फ़रमा दिया। अल्लाह ﷻ ने उन के हाथ पर ख़ैबर फ़तह़ कर दिया। और जब येह आयत उतरी : "(तो आप केह दें : आओ) हम अपने बेटों और तुम्हारे बेटों को बुला लें।" तो **रसूलुल्लाह ﷺ ने ह़ज़रत अ़ली ؓ, ह़ज़रत फ़ातिमा ؓ, ह़ज़रत ह़सन ؓ और ह़ज़रत हुसैन ؓ को बुलाया और फ़रमाया : अय अल्लाह ! येह मेरे घरवाले हैं ।"**

(स़ह़ीह़ मुस्लिम : 6220)

(27)عن أبی عبدالله الجدلی قال: قالت أم سلمة:أیسب رسول الله ﷺ على المنابر؟قلت:وأنی ذلک؟قالت:ألیس یسب علی ومن یحبه؟ فأشهد أن رسول الله ﷺ کان یحبه.(مسند أبی یعلی: 7013،قال الشیخ زبیر علی زئی والشیخ الالبانی:اسناده صحیح)

(27) अबू अ़ब्दुल्लाह बजली बयान करते हैं के उम्मे सलमा ؓ ने ह़ैरत से पूछा : **"क्या रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बरों से गालियां दी जा रही हैं ?"** मैंने अ़र्ज़ किया : ऐसा कैसे हो सकता है ? उन्हों ने फ़रमाया : **"क्या अ़ली ؓ और उन से मुह़ब्बत करने वालों को गालियां नही दी जा रही हैं ?** और मैं शहादत देती हूं के रसूलुल्लाह ﷺ अ़ली से मुह़ब्बत फ़रमाते थे"।

(मुस्नद अबी य'ला : 7013, शैख़ ज़ुबेर अ़ली ज़ई और शैख़ नासीरुद्दीन अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(28)عن سعید ابن جبیر ، قال:کنت مع ابن عباس ، بعرفات ، فقال : ما لی لا أسمع الناس یلبون ، قلت:یخافون من معاویة ، فخرج ابن عباس ، من فسطاطه ، فقال:لبیک اللهم لبیک ، لبیک فانهم قد ترکوا السنة من بغض علی.(سنن النسائی: 3007،قال الشیخ زبیر علی زئی والشیخ الالبانی:اسناده صحیح)

(28) ह़ज़रत सईद बिन जुबेर बयान करते हैं के मैं ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास ؓ के साथ अ़रफ़ात में था। वोह फ़रमाने लगे : "क्या वजह है के मैंने लोगों को लब्बैक

पुकारते नहीं सुना ?" मैंने कहा : "वोह मुआ़विया ﷺ से डरते हैं। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ अपने ख़ेमे से निकले और बुलन्द आवाज़ से पुकारा : "**لبیک اللهم لبیک** ता'ज्जूब है कि उन्हों ने ह़ज़रत अ़ली ﷺ से बुग्ज़ रखने की वजह से रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत छोड़ दी है।"

(सुनन अल नसाई : 3007, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ नासिरुद्दीन अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(29)وفی روایة سنن الکبری للبیهقی:عن سعید ابن جبیر ، قال:کنا عند ابن عباس بعرفة ، فقال:یا سعید ما لی لا أسمع الناس یلبون ، فقلت : یخافون معاویة فخرج ابن عباس من فسطاطه ، فقال:لبیک اللهم لبیک ، وإن رغم أنف معاویة اللهم العنهم فقد ترکوا السنة من بغض علی رضی الله عنه.(سنن الکبری للبیهقی: 9230،قال الشیخ زبیر علی زئی والشیخ الالبانی:اسناده صحیح)

(29) "सुनन कुबरा अल बैह़क़ी की रिवायत है, सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं के हम इब्ने अ़ब्बास ﷺ के पास मैदाने अ़रफ़ा में थे। उन्हों ने फ़रमाया : "सईद ﷺ क्या बात है, मैं लोगों को तल्बिया केहते नहीं सुन रहा हूं।" मैंने अ़र्ज़ किया : "वोह मुआ़विया ﷺ से डरते हैं। येह सुन कर इब्ने अ़ब्बास ﷺ अपने ख़ेमे से 'लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक' पुकारते हूए निकले और फ़रमाया : **"मुआ़विया ﷺ को तल्बिया ख़्वाह कितना ही नागवार क्यूं न हो, अल्लाह उन पर ला'नत फ़रमाए, अ़ली ﷺ की दुश्मनी में उन्हों ने एक सुन्नत छोड़ दी है"।**

(सुनन अल कुबरा अल बैहक़ी : 9230, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(30)عن أبی موسی قال سمعت الحسن یقول استقبل والله الحسن بن علی معاویة بکتائب أمثال الجبال فقال عمرو بن العاص إنی لأری کتائب لا تولی حتی تقتل أقرانها فقال له معاویة وکان والله خیر الرجلین أی عمرو إن قتل هؤلاء هؤلاء وهؤلاء هؤلاء من لی بأمور الناس من لی

بنسائهم من لي بضيعتهم فبعث إليه رجلين من قريش من بني عبد شمس عبد الرحمن بن سمرة وعبد الله بن عامر بن كريز فقال اذهبا إلى هذا الرجل فاعرضا عليه وقولا له واطلبا إليه فأتياه فدخلا عليه فتكلما وقالا له فطلبا إليه فقال لهما الحسن بن علي إنا بنو عبد المطلب قد أصبنا من هذا المال وإن هذه الأمة قد عاثت في دمائها قالا فإنه يعرض عليك كذا وكذا ويطلب إليك ويسألك قال فمن لي بهذا قالا نحن لك به فما سألهما شيئا إلا قالا نحن لك به فصالحه فقال الحسن ولقد سمعت أبا بكرة يقول رأيت رسول الله صلى الله عليه وسلم على المنبر والحسن بن علي إلى جنبه وهو يقبل على الناس مرة وعليه أخرى ويقول إن ابني هذا سيد ولعل الله أن يصلح به بين فئتين عظيمتين من المسلمين. (صحيح البخاري:2704،7109)

---

(30) अबू मूसा बयान करते हैं के मैंने हज़रत इमाम हसन बसरी ﷺ से सुना, वोह बयान करते थे के क़सम अल्लाह ﷻ की जब हसन बिन अली ﷺ (मुआविया के मुक़ाबले में) पहाड़ों में लश्कर ले कर पहोंचे, तो अम्र बिन आस ﷺ ने कहा (जो अमीर मुआविया ﷺ के मुशीरे ख़ास थे) के "मैं अयसा लश्कर देख रहा हूं जो अपने मुक़ाबिल को नेस्तो नाबूद किये बग़ैर वापिस नहीं जाएगा।" मुआविया ﷺ ने इस पर कहा "और क़सम अल्लाह ﷻ की, वोह इन दोनों असहाब में ज़ियादा अच्छे थे, के अय अम्र ! अगर उस लश्कर ने इस लश्कर को क़त्ल कर दिया, या इस ने उस को कर दिया, तो (अल्लाह तआला की बारगाह में) लोगों के उमूर (की जवाब देही के लिये) मेरे साथ कौन ज़िम्मेदारी लेगा, लोगों की बेवा औरतों की ख़बरगीरी के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा।" लोगों की आलो अवलाद के सिलसिले में मेरे साथ कौन ज़िम्मेदार होगा। आख़िर मुआविया ﷺ ने हसन ﷺ के यहां क़ुरैश की शाख़ बनू अब्दुश्शम्स के दो आदमी भेजे। अब्दुर्रहमान बिन समरा और अब्दुल्लाह बिन आमिर

बिन कुरैज़, आप ने उन दोनों से फ़रमाया के "ह़सन बिन अ़ली ﷺ के यहां जाओ और उन के सामने सुलह़ पेश करो। उन से इस पर गुफ़्तगू करो और फ़ैस़ला उन्हीं की मर्ज़ी पर छोड़ दो।" चुनांचे येह लोग आए और आप से गुफ़्तगू की और फ़ैस़ला आप ही की मर्ज़ी पर छोड़ दिया। ह़सन बिन अ़ली ﷺ ने फ़रमाया, "हम अब्दुल मुत्तलिब की अवलाद है (इन जंगो में) हमको मालका काफी नुकसान हो चुका है (या'नी सुलह की सूरत में उनकी किफ़ालत की जिम्मेदारी कौन लेगा ?) और ये उम्मत (इन जंगो की वजह से) अपने ख़ून में लतपत हो चूकी है। वोह केहने लगे "ह़ज़रत अमीर मुआ़विया ﷺ आप को फलां फलां पेशकश पर राज़ी हैं और आप से सुलह चाहते हैं। फ़ैस़ला आप की मर्ज़ी पर छोड़ा है और आप से पूछा है।" ह़ज़रत ह़सन ﷺ ने फ़रमाया के "इस की ज़िम्मेदारी कौन लेगा ?" उन दोनों क़ासि़दों ने कहा के "हम इस के ज़िम्मेदार हैं।" अख़िर आप ने सुलह कर ली, फिर फ़रमाया के "मैंने ह़ज़रत अबूबक्र ﷺ से सुना था, वोह बयान करते थे के मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को मिम्बर पर येह फ़रमाते सुना है और ह़सन बिन अ़ली ﷺ आंह़ज़रत ﷺ के पेहलू में थे, आप कभी लोगों की त़रफ़ मुतवज्जा होते और कभी ह़सन ﷺ की त़रफ़ और फ़रमाते के मेरा येह बेटा सरदार है और मुज़े उम्मीद है के इस के ज़रीए अल्लाह ﷻ मुसलमानों के दो अ़ज़ीम गिरोहों में सुलह कराएगा"।

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : **2704,7109**)

(31)عن أبي ذر أنه قال ليزيد ابن أبي سفيان:سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم:أول من يغير سنتي رجل من بني أمية.

قلت :ولعل المراد بالحديث تغيير نظام اختيار الخليفة، وجعله وراثة .والله أعلم.(الأوائل لابن أبي عاصم: 61،سلسلة الصحيحة:1749)

(31) सय्यिदना अबू ज़र ﷺ से रिवायत है, उन्होंने यज़ीद बिन अबी सुफ़ियान से कहा : **"मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को येह फ़रमाते सुना है कि सब से पेहले जो शख़्स़ मेरी सुन्नत को बदलेगा, वोह बनू उमय्या का एक शख़्स़ होगा।"**

अ़ल्लामा अल्बानी फ़रमाते हैं : ह़दीष से मुराद ख़लीफ़ा के इन्तिख़ाब के त़रीक़ेकार की तब्दिली और उस को विराषत बना देना है।"

(अल अवाइल लि अबी आ़सिम : 61, अल स़ह़ीह़िया : 1749)

(32)عن يوسف بن ماهک قال کان مروان علی الحجاز استعمله معاوية فخطب فجعل يذکر يزيد بن معاوية لکی يبايع له بعد أبيه فقال له عبد الرحمن بن أبی بکر شيئا فقال خذوه فدخل بيت عائشة فلم يقدروا فقال مروان إن هذا الذی أنزل الله فيه والذی قال لوالديه أف لکما أتعداننی فقالت عائشة من وراء الحجاب ما أنزل الله فينا شيئا من القرآن إلا أن الله أنزل عذری.(صحيح البخاری:4827)

(32) यूसुफ़ बिन माहक ने बयान किया के मरवान को मुआ़विया ﷺ ने ह़िजाज़ का अमीर (गवर्नर) बनाया था। उस ने एक मौक़ाअ़ पर ख़ुत्बा दिया और ख़ुत्बे में यज़ीद बिन मुआ़विया का बार बार ज़िक्र किया, ताकि उस के वालिद (मुआ़विया) के बा'द उस से लोग बै'त करें। इस पर अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी बकर ﷺ ने ए'तराज़न कुछ फ़रमाया। मरवान ने कहा इसे पकड़ लो। अ़ब्दुर्रह़मान ﷺ अपनी बहन ह़ज़रत आ़इशा ﷺ के घर में चले गए तो वोह लोग पकड़ न सके। उस पर मरवान बोला के इसी शख़्स़ के बारे में क़ुरआन की येह आयत नाज़िल हूई थी के "और जिस शख़्स़ ने अपने मां-बाप से कहा के तुफ़ है तुम पर क्या तुम मुझे ख़बर देते हो।" इस पर आ़इशा ﷺ ने कहा के हमारे (आले अबी बकर के) बारे में अल्लाह तआ़ला ने कोई आयत नाज़िल नही की बल्कि तोहमत से मेरी बरात ज़रूर नाज़िल की थी।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 4827)

(33)عن أبی هريرة قال حفظت من رسول الله صلی الله عليه وسلم وعاء ين فأما أحدهما فبثثته وأما الآخر فلو بثثته قطع هذا البلعوم.(صحيح البخاری:120)

(33) हज़रत अबू हुरैरा ﷺ, से रिवायत है वोह फ़रमाते हैं के "मैंने रसूलुल्लाह ﷺ से (इल्म के) दो बरतन याद कर लिये हैं, एक को मैंने फैला दिया है और दूसरा बरतन अगर मैं फैलाउं तो मेरा येह नरख़रा (हलक़) काट दिया जाए"।

(सहीह बुख़ारी : 120)

(34)عن عمرو بن يحيى بن سعيد بن عمرو بن سعيد قال أخبرنى جدى قال كنت جالسا مع أبى هريرة فى مسجد النبى صلى الله عليه وسلم بالمدينة ومعنا مروان قال أبو هريرة سمعت الصادق المصدوق يقول هلكة أمتى على يدى غلمة من قريش فقال مروان لعنة الله عليهم غلمة فقال أبو هريرة لو شئت أن أقول بنى فلان وبنى فلان لفعلت فكنت أخرج مع جدى إلى بنى مروان حين ملكوا بالشأم فإذا رآهم غلمانا أحداثا قال لنا عسى هؤلاء أن يكونوا منهم قلنا أنت أعلم.(صحيح البخارى:7058)

(34) अम्र बिन यहया बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा के मुझे मेरे दादा सईद ने ख़बर दी, कहा के मैं अबू हुरैरा ﷺ के पास मदीना मुनव्वरा में नबीए करीम ﷺ की मस्जिद में बैठा था और हमारे साथ मरवान भी था। अबू हुरैरा ﷺ ने कहा के "मैंने सादिक़ो मसदुक से सुना है आप ﷺ ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की तबाही क़ुरैश के चंद लड़कों के हाथ से होगी।" मरवान ने इस पर कहा "उन पर अल्लाह की ला'नत हो।" अबू हुरैरा ﷺ ने कहा के "अगर मैं उन के ख़ानदान के नाम ले कर बतलाना चाहूं तो बतला सकता हूं।" फिर जब बनी मरवान शाम की हुकूमत पर क़ाबिज़ हो गए तो मैं अपने दादा के साथ उन की तरफ़ जाता था। जब वहां उन्हों ने नौजवान लड़कों को देखा तो कहा के "शायद येह उन्ही मैं से हों।" हम ने कहा के आप को ज़ियादा इल्म है।"

(सहीह बुख़ारी : 7058)

(35)عن أبى هريرة -رضى الله عنه -يرويه ، قال:ويل للعرب من شر قد اقترب على رأس الستين تصير الأمانة غنيمة ، والصدقة غرامة ،

والشهادة بالمعرفة والحكم بالهوى .(المستدرک للحاکم: 8489،قال الشيخ زبير علي زئي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(35) “सय्यिदना अबू हुरैरा ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “एहले अ़रब के लिये उस शर के सबब अलाकत होगी जो साठ वाले साल से शुरूअ़ होगी। उस वक़्त अमानत को माले ग़नीमत ओर स़दक़ो ज़कात को तावान समझ्रा जाएगा और ख़्वाहिशाते नफ़सानी का हुकम माना जाएगा”।

(मुस्तदरक लिल हाकिम : 8489, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(36)عن حذيفة ان رسول الله ﷺ قال:إن هذا ملک لم ينزل الأرض قط قبل هذه الليلة استأذن ربه أن يسلم على ويبشرنى بأن فاطمة سيدة نساء أهل الجنة وأن الحسن والحسين سيدا شباب أهل الجنة.(سنن الترمذی: 3781،قال الشيخ زبير علی زئی والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(36) सैयदना हुज़ैफ़ा ﷺ ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “येह एक फ़रिश्ता था जो उस रात से पेहले ज़मीन पर कभी नहीं उतरा था, उस ने अपने रब से मुझे सलाम कर ने और येह बशारत देने की इजाज़त मांगी के फ़ातिमा ﷺ जन्नती औरतों की सरदार हैं और ह़सनो हुसैन ﷺ एहले जन्नत के जवानों (या’नी जो दुनिया में जवान थे उन) के सरदार हैं”।

(सुनन तिरमिज़ी : 3781, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(37)عن ابن أبى نعم قال:سمعت عبد الله بن عمر وسأله عن المحرم قال شعبة أحسبه يقتل الذباب فقال أهل العراق يسألون عن

الـذبـاب وقـد قتـلـوا ابـن ابنة رسول الله صلى الله عليه وسلم وقال النبى صلى الله عليه وسلم هما ريحانتاى من الدنيا.(صحيح البخارى:3753)

(37) इब्ने अबी नुअम ताबई ﷺ बयान करते हैं के मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﷺ से सुना और किसी ने उन से मुह़रम के बारे में पूछा थे, शुअ़बा ने बयान किया के मेरे ख़याल में येह पूछा था के "अगर कोई शख़्स़ (अह़राम की ह़ालत में) मक्खी मार दे तो उसे क्या कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा ?" इस पर अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ﷺ ने फ़रमाया : "इ़राक़ के लोग मक्खी के बारे में सवाल करते हैं जब के यही लोग रसूलुल्लाह ﷺ के नवासे को क़त्ल कर चुके हैं, जिन के बारे में हु़ज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया था कि दोनों (नवासे ह़सनो हु़सैन ﷺ) दुनिया में मेरे दो फूल हैं।"

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : 3753)

(38)عـن يعلى بن مرة قال:قال رسول الله ﷺ :حسين منى وأنا من حسيـن،أحب الله من أحب حسيناً،حسين سبط من الأسباط.(سنن الترمذى: 3775،قال الشيخ زبير على زئى والشيخ الالبانى:اسناده صحيح)

(38) या'ला बिन मुर्रा बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "हु़सैन ﷺ मुझ से हैं और मैं हु़सैन से हूं। अल्लाह ﷻ भी उस से मुह़ब्बत करता है जो हु़सैन ﷺ से मुह़ब्बत करता है। हु़सैन ﷺ मेरे नवासों में से एक नवासा है"।

(सुनन तिरमिज़ी : 3775, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(39)عـن عبـد الـلـه بـن نـجي عن أبيه انه سار مع على رضى الله عنه وكـان صـاحـب مـطهـرته فلما حاذى نينوى وهو منطلق إلى صفين فنادى عـلى رضى الله عنه اصبر أبا عبد الله اصبر أبا عبد الله بشط الفرات قلت وماذا قال دخلت على النبى صلى الله عليه وسلم ذات يوم وعيناه تفيضان

قلت يا نبي الله أغضبک أحد ما شأن عينيک تفيضان قال بل قام من عندی جبريل قبل فحدثني ان الحسين يقتل بشط الفرات قال فقال هل لک إلی ان أشمک من تربته قال قلت نعم فمد يده فقبض قبضة من تراب فاعطانيها فلم أملک عيني أن فاضتا .(مسند أحمد: 648،قال الشيخ زبير علي زئي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(39) अ़ब्दुल्लाह बिन नज्जा के वालिद एक मर्तबा ह़ज़रत अ़ली ﷺ के साथ जा रहे थे, उन के ज़िम्मे ह़ज़रत अ़ली ﷺ के वुज़ू की ख़िदमत थी, जब वोह सिफ़्फ़ीन के त़रफ़ जाते हूए नैनवा के क़रीब पहोंचे तो ह़ज़रत अ़ली ﷺ ने पुकार कर फ़रमाया "अबू अ़ब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे पर रुक जाओ", मैंने पूछा के "ख़ै़रियत है ?" फ़रमाया मैं एक दिन नबीए करीम ﷺ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ﷺ की आंखों से आंसूओं की बारिश हो रही थी, मैंने अर्ज़ किया "अय अल्लाह के नबी ﷺ ! क्या किसी ने आप को ग़ुस्सा दिलाया, ख़ै़र तो है के आप की आंखो़ से आंसू बेह रहे हैं ? फ़रमाया ऐसी कतई बात नहीं है, बल्के अस़ल बात येह है के अभी थोड़ी देर पेहले मेरे पास से जिब्रईल ﷺ उठ कर गए हैं, वोह केह रहे थे के हुसैन ﷺ को फ़ुरात के किनारे शहीद कर दिया जाएगा। फिर उन्हों ने मुझ से कहा के अगर आप चाहें तो मैं आप को उस मिट्टी की ख़ुश्बू सूंघा सकता हूं ? मैंने उन्हें इष्बात में जवाब दिया, तो उन्हों ने अपना हाथ बढ़ा कर मुट्ठी भर कर मिट्टी उठाई और मुझे देदी, बस उस वक़्त से अपने आंसूओं पर मूझे क़ाबू नहीं है"।

(मुस्नद अह़मद : **648**, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(40)عن ابن عباس قال رأيت النبی صلی الله علیه وسلم فی المنام بنصف النهار اشعث أغبر معه قارورة فیها دم یلتقطه أو یتتبع فیها شیأ قال قلت یا رسول الله ما هذا قال دم الحسین وأصحابه لم أزل أتتبعه منذ الیوم قال عمار فحفظنا ذلک الیوم فوجدنا قتل ذلک الیوم.(مسند

أحمد:2165،قال الشيخ زبير علی زئی والشيخ الالبانی:اسناده صحيح)

(40) "हज़रत इब्ने अब्बास ﷺ से मरवी है के मैंने एक मर्तबा निस्फ़ुन्नहार के वक़्त ख़्वाब में नबी ﷺ की ज़ियारत का शर्फ़ हासिल किया, उस वक़्त आप ﷺ के बाल बिखरे हूए और जिस्म पर गर्दो गुबार था, आप ﷺ के पास एक बोतल थी जिस में वोह कुछ तलाश कर रहे थे, मैंने अ़र्ज़ किया 'या रसूलुल्लाह ﷺ ! येह क्या है ?' फ़रमाया हुसैन ﷺ और उस के साथीयों का ख़ून है, मैं सुबह से इस की तलाश में लगा हुवा हूं, रावीए ह़दीष अ़म्मार केहते हैं के हम ने वोह तारीख़ अपने ज़हन में मेहफ़ूज़ कर ली बा'द में पता चला के ह़ज़रत इमामा हुसैन ﷺ उसी तारीख़ और उसी दिन शहीद हूए थे। (जिस दिन ह़ज़रत इब्ने अब्बास ﷺ) ने ख़्वाब देखा था"।

(मुस्नद अह़मद : 2165, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(41)عن شهر بن حوشب قال سمعت أم سلمة زوج النبی صلی الله عليه وسلم حين جاء نعی الحسين بن علی لعنت أهل العراق فقالت قتلوه قتلهم الله غروه وذلوه لعنهم الله فانی أريت رسول الله صلی الله عليه وسلم جاء ته فاطمة غدية ببرمة قد صنعت له فيها عصيدة تحمله فی طبق لها حتی وضعتها بين يديه فقال لها أين ابن عمک قالت هو فی البيت قال فاذهبی فادعيه وائتنی بابنيه قالت فجاء ت تقود ابنيها کل واحد منهما بيد وعلی يمشی فی أثرهما حتی دخلوا علی رسول الله صلی الله عليه وسلم فاجلسهما فی حجره وجلس علی عن يمينه وجلست فاطمة عن يساره قالت أم سلمة فاجتبذ من تحتی کساء خيبريا کان بساطا لنا علی المدامة فی المدينة فلفه النبی صلی الله عليه وسلم عليهم جميعا فاخذ بشماله طرفی الکساء والوی بيده اليمنی إلی ربه عزوجل قال اللهم أهلی أذهب

عنهم الرجس وطهرهم تطهيرا اللهم أهل بيتى اذهب عنهم الرجس وطهرهم تطهيرا اللهم أهل بيتى أذهب عنهم الرجس وطهرهم تطهيرا قلت يا رسول الله ألست من أهلك قال بلى فادخلى فى الكساء قالت فدخلت فى الكساء بعدما قضى دعاءه لابن عمه على وابنيه وابنته فاطمة رضى الله عنهم .(مسند أحمد: 26592،قال الشيخ زبير على زئى والشيخ الالبانى:اسناده صحيح)

(41) हज़रत उम्मे सलमा ﵂ मर्वी है के "जब उन्हें हज़रत इमाम हुसैन ﵁ की शहादत का इल्म हुवा तो उन्हों ने एहले इराक़ पर ला'नत भेजते हूए फ़रमाया के उन्हों ने हुसैन ﵁ को शहीद कर दिया उन पर अल्लाह ﷻ की मार हो उन्हों ने हुसैन ﵁ को धोका दे कर तंग किया उन पर अल्लाह ﷻ की मार हो, मैंने वोह वक़्त देखा है के एक मर्तबा नबी ﷺ उन के घर में थे के हज़रत फ़ातिमा ﵂ एक हंडिया ले कर आ गई जिस में 'हरीरा' था, नबी ﷺ ने उन से फ़रमाया के अपने शौहर और बच्चो को भी बुला लाओ चुनांचे हज़रत अ़ली और हज़रात ह़सनैन ﵄ भी आ गए और बैठ कर वोह 'हरीरा' खाने लगे नबी ﷺ उस वक़्त एक चबूतरे पर नींद की ह़ालत मे थे नबी ﷺ के जिस्म मुबारक के नीचे ख़ैबर की एक चादर थी और मैं हुजरे में नमाज़ पढ़ रही थी के उसी दौरान अल्लाह ﷻ ने येह आयत नाज़िल फ़रमा दी **"अय एहले बैत अल्लाह तो तुम से गंदगी को दूर कर के तुम्हें ख़ूब साफ़ सुथरा बनाना चाहता है।"** इस के बा'द नबी ﷺ ने चादर का बक़िया हिस्सा ले कर उन सब पर डाल दिया और अपना हाथ बाहर निकाल कर आसमान की त़रफ़ इशारा कर के फ़रमाया ! **'अय अल्लाह येह लोग मेरे एहले बैत और मेरा ख़ामे माल हैं तू इन से गंदगी दूर कर के इन्हें ख़ूब साफ़ सुथरा कर दे,** दो मर्तबा येह दुआ की इस पर मैंने उस कमरे में अपना सर दाख़िल कर के अ़र्ज़ किया 'या रसूलुल्लाह ﷺ क्या मैं आप के एहले ख़ाना में से नहीं हूं ?' नबी ﷺ ने फ़रमाया 'क्यूं नहीं तुम मी चादर में आ जाओ' चुनांचे मैं भी नबी ﷺ की दुआ़ के बा'द उस में दाखिल हो गई"।

(मुस्नद अह़मद : 26592, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(42)عـن جـريـر عـن مـحـمـد عن أنس بن مالک رضی الله عنه أتی عبيـد الـلـه بـن زيـاد بـرأس الحسين عليه السلام فجعل فی طست فجعل يـنـكـت وقال فی حسنه شيئا فقال أنس كان أشبههم برسول الله صلی الله عليه وسلم وكان مخضوبا بالوسمة.(صحيح البخاری:3748)

(42) जरीर बयान करते हैं के उन से मुहम्मद ने बयान किया और उन से बयान अनस बिन मालिक ﷺ ने के जब ह़ज़रत हुसैन ﷺ का सर मुबारक उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास लाया गया और एक त़श्त में रखा गया तो वोह बदबख़्त उस पर लकड़ी से मार ने लगा और आप के हुस्न और ख़ूबसूरती के बारे में भी कुछ कहा (कि मैंने इस से ज़ियादा ख़ूबसूरत चेहरा नहीं देखा) इस पर ह़ज़रत अनस ﷺ ने कहा **ह़ज़रत हुसैन ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ से सब से ज़ियादा मुशाबेह थे। उन्हों ने वस्मा (नील के पत्ते जिन से ख़िज़ाब किया जाता है या काली महेंदी) का ख़िज़ाब इस्ति'माल कर रखा था"।**

(स़ह़ीह़ बुख़ारी : **3748**)

(43)عـن أبـی سـعـيـد الـخدری رضی الله عنه قال:قال رسول الله ﷺ : والـذی نـفـسی بيده لا يبغضنا أهل البيت أحد الا أدخله الله النار.(صحيح ابن حبان: 7104،المستدرک للحاكم: 4717،قال الشيخ زبير علی زئی والشيخ الالبانی:اسناده صحيح)

(43) सय्यिदना अबू सईद ख़ुदरी ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : **"क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है, एहले बैत से जो भी बुग़्ज़ रखेगा, अल्लाह उसे जहन्नम में डाल देगा।"**

(स़ह़ीह़ इब्ने ह़िब्बान : **7104**, अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम : **4717**, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(44)عن ابراهيم النخعي قال:لو كنت فيمن قتل الحسين بن علي،ثم غفر لي ثم أدخلت الجنة،استحييت أن أمر على النبي ﷺ فينظر في وجهي.(المعجم الكبير للطبراني: 2829،قال الشيخ زبير على زئي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(44) सहीह बुख़ारी और सहीह मुस्लिम के बुनियादी रावी और मश्हुर मुहद्दिष सय्यिदना इब्राहीम नख़ई ﷬ फ़रमाते हैं : अगर बिल्फ़र्ज़ मैं उन लोगों से साथ षामिल होता जिन्हों ने सय्यिदना हुसैन ﷜ को शहीद किया था और फिर क़यामत के दिन मेरी मग़फ़िरत भी कर दी जाती और मैं जन्नत में दाख़िल भी हो जाता तो भी उस वक़्त जन्नत में मुझे रसूलुल्लाह ﷺ के पास से गुज़रने में शर्म मेहसूस होती के कहीं आप ﷺ मेरी तरफ़ देख न लें के तू दुनिया में हुसैन ﷜ के क़ातिलों का हामी था।”

(अल मुअ़जमुल कबीर लिल तिबरानी : **2829**, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल अल्बानी ने कहा : इस्नाद सहीह)

(45)أنس بن مالك قال كنت عند بن زياد فجيء برأس الحسين فجعل يقول بقضيب له في أنفه ويقول ما رأيت مثل هذا حسنا قال قلت أما إنه كان من أشبههم برسول الله ﷺ.(سنن الترمذي: 3778،قال الشيخ زبير على زئي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(45) अनस बिन मालिक ﷜ केहते हैं के मैं उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के पास था कि हुसैन ﷜ का सर लाया गया तो वोह उन की नाक में अपनी छड़ी मार कर केहने लगा ‘मैं ने इस जैसा ख़ूबसूरत किसी को नहीं देखा, तो मैंने कहा : **“सुनो येह एहले बैत में रसूलुल्लाह ﷺ से सब से ज़ियादा मुशाबेह थे।”**

(सुनन तिरमिज़ी : **3778**, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद सहीह)

(46)عـن عـمـارـة بـن عـمـيـر قـال لما جيء برأس عبيد الله بن زياد وأصـحـابه نضدت في المسجد في الرحبة فانتهيت إليهم وهم يقولون قد جـاء ت قـد جـاء ت فـإذا حية قـد جاء ت تخلل الرؤوس حتى دخلت في مـنـخري عبيد الله بن زياد فمكثت هنيهة ثم خرجت فذهبت حتى تغيبت ثـم قـالـوا قـد جـاء ت قـد جـاء ت فـفـعلت ذلك مرتين أو ثلاثـا(سنن الترمذي:3780،قال الامام الترمذي والشيخ الالباني:اسناده صحيح)

(46) "अम्मारा बिन उ़मैर केहते हैं के "जब उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उस के साथीयों के सर लाए गए और कूफ़ा की एक मस्जिद में इन्हें तरतीब से रख दिया गया और मैं वहां पहोंचा तो लोग येह केह रहे थे : 'आया आया', तो क्या देखता हूं के एक सांप सरों के नीचे से हो कर आया और उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद के दोनों नथनों में दाख़िल हो गया और थोड़ी देर उस में रहा फिर निकल कर चला गया, यहां तक के ग़ाइब हो गया', फिर लोग केहने लगे : 'आया आया' इस त़रह़ दो या तीन बार हुवा"।

(सुनन तिरमिज़ी : 3780, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

(47)عـن عبد الله بن عباس رضي الله عنهما ان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم قال يا بني عبد المطلب اني سألت الله لكم ثلاثا ان يثبت قـائـمـكـم وان يهـدي ضـالكم وان يعلم جاهلكم وسألت الله ان يجعلكم جـوداء نـجداء رحماء فلو أن رجلا صفن بين الركن والمقام فصلى وصام ثـم لـقـي الـله وهو مبغض لأهل بيت محمد دخل النار.هذا حديث حسن صـحـيـح على شرط مسلم ولم يخرجاه(المستدرك للحاكم:4712،قال الشيخ الالباني والشيخ زبير علي زئي:اسناده صحيح)

(47) सय्यिदना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : “अय बनू अ़ब्दुल मुत़ल्लिब ! मैंने तुम्हारे लिये अल्लाह ﷻ से तीन चीज़ें मांगी हैं : जो तुम में खड़ा हो, उसे षाबित क़दम रखे, तुम्हारे भटके हूए को हिदायत दे और तुम्हारे अनपढ़ों को ता’लिम याफ़ता बना दे। मैंने अल्लाह से येह भी मांगा है कि तुम्हें सख़ी, शरीफ़ और शफ़ीक़ बना दे। **अगर कोई शख़्स रुकन और मक़ामे इब्राहीम के दरमियान सफ़ बांध कर नमाज़ पढ़े और रोज़ा रखे और फिर अल्लाह से इस ह़ाल में मुलाक़ात करे कि वोह मुह़म्मद ﷺ के एहले बैत से बुग्ज़ रखता हो तो अल्लाह ﷻ उसे जहन्नम में दाख़िल करे”।**

(अल मुस्तदरक लिल ह़ाकिम : **4712**, शैख़ ज़ुबैर अ़ली ज़ई और शैख़ अल्बानी ने कहा : इस्नाद स़ह़ीह़)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

तर्जुमा: ऐ अल्लाह عزوجل रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसा के तूने रहमत नाज़िल फरमायी इब्राहीम عليه السلام पर और इब्राहीम عليه السلام की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक और बड़ी बुज़ुर्गी वाला है।

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ
عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

तर्जुमा: ऐ अल्लाह عزوجل बरकत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद ﷺ पर, और मुहम्मद ﷺ की आल पर जैसी की बरकत नाज़िल फरमायी आपने इब्राहीम عليه السلام पर और इब्राहीम عليه السلام की आल पर, बेशक तू तारीफ़ के लायक और बुज़ुर्गी वाला है।

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)
IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION
Reg.No. E/1432/Aravalli. GUJARAT, INDIA
Modasa, Aravalli, Gujarat (India)
Mo. 85110 21786